1. Acc. No. :→ 50529. सुन्दर सँगार। सुन्दर कवि कृत।

2. Acc. No. :→ 50530. नामदेव जी की परिचई

3. Acc. No. :→ 50531. तिलोचन जी की परिचई। अनन्तदास कृत।

4. Acc. No. :→ 50532. अंगद जी की परिचई। अनन्तदास कृत।

5. Acc. No. :→ 50533. प्रह्लाद लीला।

6. Acc. No. :→ 50534. कबीर के दोहे।

7. Acc. No. :→ 50535. शकुनावली।

8. Acc. No. :→ 50536. सुखदेव लीला।

9. Acc. No. :→ 50537. ध्रुव चरित्र।

10. Acc. No. :→ 50538. कलजुग पचीसी

11. Acc. No. :→ 50529. सुन्दर सँगार। सुन्दर कवि कृत।

॥ ६० ॥ श्री गणेशाय नमः ॥ अथ क
लजुग पचीसी लिष्यते ॥ गण
पति कुं जमनाय हूं ॥ रिद्धि सिद्धि
कै हेत ॥ बाक बादिनी मात तूं ॥ सु
न अछिर तुक दैत ॥ १ ॥ कछु कह्यो
चाहत हौ तुम्हारे पुंन्य प्रताप ॥ ता
हि सुने सुष उपजै ॥ दया करो
अब आय ॥ २ ॥ कीन्हौ पहल प्र
ताप मे ॥ इनको हूं कमनजपाय
कलिब्यौहार बनाय हूं ॥ सुनो
चितर चित लाय ॥ ३ ॥ चौपही ॥

नितराजकि ऐसी होती दौलतका
सुषलिजे गजासिका और तालमे
लकी चढति दिन दिन कीज्ये ॥ अब
पैसा कमि कमिस बमाही ॥ रूपैया
है नै मासा ॥ नंदराम कछु दुनिया
माही देष्या अजबत मासा ॥ ४ ॥ फौ
जदार उमराव आगिले स्वामि
काम कू अरते ॥ मेवासी कू मारि
तारि कै ॥ सुषबासी सुष करते ॥ अ
बजोरतलब कू जोर नपोहचै ॥ लूटै
रईत मुलासा ॥ ५ ॥ नंदराम ॥

बहुदरसन की सेवा करते ॥ दूषी देव
दुखहरते ॥ गउ बिप्र कू देखि सा करे
चूप बमे यो सरते ॥ अब घेरे गउ
बिप्र कू लूटे ॥ पर त्रिया भोग बिल
सा ॥ नंदराम कछु ॥ ६ ॥ मन सब
दार मुल्ला जम न होते ॥ ताकी बोल
ग जो चवे ॥ मान स ताके घरे बिरं
गे ॥ वे मुही मन मे रोवे ॥ जुमीदार
जागीर भोगवे ॥ बेलै बहरी पासि
नंदराम ॥ ७ ॥ ताम हलाली के मु
हलाली ॥ षाल षाल मे दोसे ॥ नि
मष हरामि के दरवाजे ॥ घोडा हि

राहि राहि रासै ॥ ध्यानतें हरघकों

होहु पावै ॥ चोर जारकसी तासा ॥ ८

नंदराम कछु ॥ रामसनेही जोच

लि आवै ॥ ताकौ प्यारो ध्यावै ॥ राम

जनि कूपरची ज़ेजे ॥ आदरसहि

त बूलावै ॥ घरनारी कू मारिडारि

कै ॥ गनिकातें घरवासा ॥ नंदरा

म कछु ॥ ९ ॥ सौरसे बपठा रातुरक

मा ॥ छोडि चाकरे बैठे ॥ जुल्लिहा

पुनीया बांधि कमरसो ॥ फीरतचे

हटे गैठे ॥ जंगजुउेजे बापिठि हिमा

वै॥होतधनिकाहासा॥१०॥नंदरा
मकछु॥साचोजायचौहटैऊ
गडै॥साबिबुलावैसाची॥लि
ष्यापखामैंकुआगेगास्या
घरिघूबकहिबाची॥कूणकी
जेबरसमतिपोकुची॥साचैरी
याधकासा॥नंदरामकछु॥
॥११॥बायलुरघरिघतमडावै
अपनोनावकढावै॥काठैक
रजबोहरासेति॥गाढैसोग

धि षावै॥ रामलेत है जा दिन नही
तै॥ ले रहिबे की आसा॥ नंद राम क
छु॥ १२॥ गउ कुहार चरन अबला
जी॥ अबला फिर कौ डाख्यौ॥ दौरि
धि ग के घर मै पैठो॥ पति परना
कू मार्यौ॥ निरधन देषि सगाई
तोडै॥ धन सो करे न तासा॥ नंद रा
म कछु॥ १३॥ बिप्र भागि सो रुचि क
रि जीवै॥ पि वै तिलक तमाषू॥ व्या
रिन्यो तिये चौदा आवै सा धिली

येकूं रण बाकूं ॥ संध्या तर्पण कूं है

थोरे ॥ बिकथा कूं बकता सा ॥ नं

द राम कहू ॥ १४ ॥ निर्धन हि सेसा

ह जगत मैं ॥ और देष ब्यौपारी

जोगी नाव धराय जगत मैं ॥ घ

र मैं चंचल नारी ॥ सेली मुद्रा

छार लगाये ॥ घर जड़ि मैं नली

बासा ॥ नंदराम कहु ॥ १५ ॥ पंडि

त नितर जान न पावै ॥ नाउ बो

लिकै लीजे ॥ दीन दुषी को चीन्ह

त नाही ॥ ऊम कलावत दीजे ॥

न्ती नसी हत बि वसी लागत ॥ मोटी च लनि हूलासा ॥ नंदराम कहू ॥१६॥ तंस्त्रू सिद्दे षिद्धि नालि कहावे ॥ दिना बडी सो उायरण ॥ सा धमंग ग की पग उी फाडे ॥ पठे घि ग के पायन ॥ परवानी कू पाचन दी ज्ये ॥ परपंचि कू पप चासा ॥ नंद राम कहु ॥१७॥ दातार छीनत अति ही हीसे ॥ कपन पेट बछावे बहुरा चारनजी कू नही मानत ॥

निति छिदालि पहरावै ॥ कुलवं
तीतन नागी दीसै ॥ बोस्पा पहरै
षासा ॥ नंदराम कछु ॥ १८ ॥ नाई
बंधपाहु रोग आवै ॥ घर कि कल
हजमाउँ ॥ फाडै बासण तोडै
सासरा ॥ नावै ज्यो पति नाउँ
जस्यो बूस्या सा वाहि परासे ॥
निज नाइ सुषदासा ॥ नंदराम
कछु ॥ १९ ॥ आठ पहर चाकरी क
रवै ॥ ताकी कोइ मन न बूझै ॥ उत्तरै
दास जु रैत सही सो ॥ भला बुरी

नही सूझै ॥ रिसबति देवै सारि पजो
वै ॥ ताकी घरगी दी ग्लासा ॥ नंदराम क
छु ॥ २० ॥ मातरुतकू आगे लेकारि ॥ न
घरेसो जघिल्ला वै ॥ बो लीठाली और
घिलगटी ॥ छैलनकू जरि झावै ॥ जा
कैम रवा गरवाहू तै बानी की रहला
सा ॥ नंदरामकछु ॥ २१ ॥ ग्पानी गुनी
नुषग्रति षीचे ॥ मूरषिके धन दासै
वहूपालरसै सु थसैासोवे ॥ सासबा
पड़ीपासै ॥ तो परी वाकू नगर षान
कै ॥ पतिनी पानपतासा ॥ नंदराम क

छु ॥ २२ ॥ चरनोदिक ऋौरतु लसी
दलकूं लेतहेतसें घोरे ॥ मदिराऋा
मिषषानपानकूं ॥ बोलतहीधन
जोरा ॥ करिमिचाई नारी ताकवे ॥
देकरि चाही दिलासा ॥ नंदराम
कछु ॥ २३ ॥ नाटकैचेटक तामह
दीसे ॥ नाकी करैन सेवा ॥ भूतष्या
लसे ष्याल दिषावे ॥ ताकू माने
देवा ॥ ऋंतरजामीकूनहि मानत
कलिब्योहारपचासा ॥ नंदराम
कछु ॥ २४ ॥ कलिब्योहारपचीसी

बरणी॥ जथा जुगति मति मेरी॥ कल जुग की जोय ही बानगी और रासि बैहु तेरी॥ राषै राम मानैया जे गमै॥ नंद नंदन सुषरासा॥ नंद राम कछु दुनीया माही दे ष्यात्र जबत मासा॥ इति कलिजुग पचीसी संपूर्ण समाप्तं॥ श्री रस्तु॥

स